सारांशिका

"मानव जाति की इस अनन्त निधि में जितना कुछ अनुभूति-भाण्डार लिपिबद्ध है, वही साहित्य है| और भी अक्षरांकित रूप में जो अनुभूति-संचय विश्व को प्राप्त होता रहेगा, वह होगा साहित्य|" जैनेन्द्र का यह कथन मानव, उसकी अनुभूतियों और उन अनुभूतियों का संचय की ओर ध्यान केन्द्रित करता है| यही बात उपन्यास के साहित्य में विस्तृत फलक के साथ पाठक के सामने आती है| वर्तमान समय में उपन्यास विश्व-साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है, जो लगातार विकसनशील है| प्रेमचंद के अनुसार इसे जीवन की कला भी कहा जाता है| उपन्यास में जिन्दगी की वृहत् तस्वीर अपने समस्त वैविध्य, गहरे भाव-बोध, वैविध्य दर्शन, मानव-मूल्य और प्रश्नों के साथ चित्रित होती है| हिन्दी उपन्यास साहित्य ने शुरू से लेकर आज तक अनेक प्रकार के मोड़ लिए हैं| इस यात्रा में साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिन्दी उपन्यासों का अपना एक अलग ही महत्त्व है| यही वजह है कि मैंने अपने शोध-कार्य के लिए इस विषय का चयन किया| साहित्य अकादमी पुरस्कार भारत का एक साहित्यिक सम्मान है, यह सम्मान प्रतिवर्ष भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त प्रमुख भाषाओं में प्रकाशित सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक कृति को प्रदान किया जाता है| भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भारतीय भाषाओं के अलावा ये राजस्थानी और अंग्रेजी भाषा, यानी कुल 24 भाषाओं में प्रदान किया जाता है| इसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं और भारत में होने वाली साहित्यिक गतिविधियों का पोषण और समन्वय करना है| हिन्दी साहित्य में अब तक 23 उपन्यासों को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल चुके हैं| मैंने इन समस्त उपन्यासों को ध्यान में रखते हुए इस शोध ग्रन्थ को लिखा है| मेरे शोध का विषय है- **"साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिन्दी उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (महिला साहित्यकारों के विशेष सन्दर्भ में")**

विषय का उद्देश्य (Objectives)

किसी भी कार्य को सफलता पूर्वक निष्पादित करने के लिए उद्देश्यों का निर्धारण करना सबसे महत्वपूर्ण होता है| अत: शोधकार्य में उद्देश्यों का निर्धारण सबसे प्रमुख सोपान है| प्रस्तुत शोध विषय से संबंधित साहित्य के अध्ययनोपरांत अनुभूत समस्या ने उद्देश्यों के निर्धारण में पहली सीढ़ी तैयार की| उपन्यासों पर लिखा तो बहुत गया है पर साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिन्दी उपन्यासों का समग्रता में अध्ययन नहीं हुआ है| यही कारण है कि इस विषय को लेकर शोध करना मेरी पहली प्राथमिकता रही है| पुरस्कृत उपन्यासों का

अपना एक विशिष्ट विषय कलेवर है| ऐसे में अपने शोध कार्य के उद्देश्यों का निर्धारण मैंने उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर किया है| मेरे दृष्टिकोण से पुरस्कार को केंद्र में रखकर किया गया यह शोध कार्य नवीन एवं मौलिक तो होगा ही साथ ही हिन्दी अध्येताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा| जिसका विश्लेषणात्मक अध्ययन करना मेरे शोध कार्य का प्रमुख प्रयोजन है| मेरे शोध कार्य का उद्देश्य निर्धारण निम्न बिन्दुओं के तहत किया गया है

1. साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिन्दी साहित्यकारों एवं उनके उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन करना|

2. पुरस्कृत महिला हिन्दी साहित्यकारों के उपन्यासों में अभिव्यक्त युगीन परिस्थितियों के प्रभाव का मूल्यांकन करना|

3. पुरस्कृत महिला हिन्दी उपन्यासकारों के साहित्य में समय व समाज सापेक्ष वैयक्तिक समस्याओं के संदर्भ का मूल्यांकन
4. पुरस्कृत महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में निरूपित विषय व समकालीन विमर्श का सूक्ष्म विश्लेषण करना|
5. पुरस्कृत महिला हिन्दी साहित्यकारों के उपन्यासों में भाषा एवं शैली का मूल्यांकन करना|

विषय से संबंधित शोध साहित्य की समीक्षा (Review of Literature)

हिन्दी में पुरस्कृत उपन्यासों से संबंधित शोध कार्यों की अद्यतन जानकारी के लिए मैंने शोधगंगा के साथ-साथ अन्य कई विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय का अवलोकन किया| इस दौरान मैंने पाया कि पुरस्कृत उपन्यासों के लेखक विशेष के साहित्यिक मूल्यों उसके वैचारिक सरोकार इत्यादि पर शोध कार्य किया गया है, किन्तु पुरस्कृत उपन्यासों के समग्र दृष्टिकोण पर किए गए कार्य का अभाव दिखाई पड़ता है जिसकी पूर्ति करने का प्रयास मेरे शोध कार्य में किया जाएगा|

शोध प्रविधि (Methodologies/approaches applied)

प्रस्तुत शोध कार्य की गुणवत्ता को बनाए रखने एवं उसके सफल निष्पादन के लिए मैंने विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक, समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया है| इसके अतिरिक्त शोध कार्य को और अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए शोध विषय से

संबंधित साक्षात्कार हैं जो महिला साहित्यकारों से विशेष तौर पर बातचीत करने का प्रयास का परिणाम है|

शोध विषय की रूपरेखा व अध्याय-विभाजन

शोध कार्य के लिए चयनित विषय वस्तु एवं विमर्श के धरातल के आधार पर इस शोध कार्य को मैंने मुख्यतः पांच अध्यायों में विभाजित किया है जो निम्नलिखित है-

अध्याय एक 'साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिन्दी उपन्यासों का परिचयात्मक सर्वेक्षण' है| इस अध्याय को कालक्रम के अनुसार चार उपअध्याय में बांटा गया है| सभी लेखकों का सामान्य परिचय देते हुए उनके पुरस्कृत उपन्यासों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है| पहले उपअध्याय '1960-1980 के मध्य पुरस्कृत उपन्यास' में कुल सात उपन्यास हैं, जिनका लेखकों के साथ विवेचन किया गया है| साहित्य की उपन्यास विधा में पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार सन 1961 ई. में 'भगवतीचरण वर्मा' को उनके उपन्यास 'भूले-बिसरे चित्र' के लिए दिया गया है| कृष्णा सोबती पहली महिला लेखिका रही हैं जिन्हें उपन्यास विधा में यह पहला सम्मान प्राप्त हुआ| दूसरे उपअध्याय '1990-2000 के मध्य पुरस्कृत उपन्यास' में कुल पांच उपन्यास हैं जिन्हें यह सम्मान मिला| वे इस प्रकार हैं- 'शिवप्रसाद सिंह' का 'नीला चाँद', 'गिरिराज किशोर' का 'ढ़ाई घर', 'विष्णु प्रभाकर' का 'अर्द्धनारीश्वर', 'सुरेन्द्र वर्मा' का 'मुझे चाँद चाहिए', और 'विनोद कुमार शुक्ल' का 'दीवार में एक खिड़की रहती थी'| इन सभी लेखकों एवं उनके उपन्यासों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है| तीसरे उपअध्याय में '2001-2010 के मध्य आए सभी पुरस्कृत उपन्यासों' का विवेचन किया गया है| इसमें कुल छः उपन्यास है- 'अलका सरावगी' का 'कलिकथा वाया बाइपास', 'कमलेश्वर' का 'कितने पाकिस्तान', 'मनोहर श्याम जोशी' का 'क्याप', 'अमरकांत' का 'इन्हीं हथियारों से', और 'गोविन्द मिश्र' का कोहरे में कैद रंग', और 'उदय प्रकाश' का 'मोहनदास'| चौथा एवं अंतिम उपअध्याय में '2011-2020 के मध्य' आए कुल पांच उपन्यासों का संक्षिप्त वर्णन है| यहाँ 'काशीनाथ सिंह' का 'रेहन पर रग्घू', 'मृदुला गर्ग' का 'मिलजुल मन', 'रमेशचन्द्र शाह' का 'विनायक', 'नासिरा शर्मा' का 'पारिजात', 'चित्रा मुद्गल' का 'नाला सोपारा' आदि का विवेचन किया गया है| अतः इस अध्याय में कुल तेईस लेखकों एवं उनके उपन्यासों का परिचय सन्दर्भ को दिखाने का प्रयास किया गया है|

अध्याय दो 'पुरस्कृत उपन्यासों में वर्णित युगीन परिस्थितियों' पर केन्द्रित है| जिसके अंतर्गत युगीन परिस्थिति को स्पष्ट करते हुए मैंने उसका सामान्य परिचय प्रस्तुत किया

है| इसके बाद इस अध्याय को कुल पांच उपअध्याय में वर्गीकृत किया है जिसमें उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, और आर्थिक पहलुओं को रेखांकित करते हुए विवेचन किया है| 'सामाजिक परिस्थिति' के द्वारा उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज जीवन का विश्लेषण किया गया है| सभी उपन्यास अपनी अलग-अलग विषय वस्तु को लेकर कथा कहतें हैं, लेकिन परिवार, संबंध, व्यक्तियों के अन्तःसम्बन्ध की परिपाटी एक सी ही है| जिसका मुख्य कारण है पृष्ठभूमि में भारतीय समाज का होना| सभी उपन्यास भारतीय समाज की संरचना को दिखाते हुए अपने-अपने समय की स्थिति को बयां करतें हैं| 'जिंदगीनामा' एक आंचलिक कहानी को दिखाता है, जिसमें पंजाब के ग्रामीण जीवन के समाज को पूरी सजीवता के साथ दिखाया गया है| भारतीय ग्रामीण समाज में परिवार और संबंध की सजीवता को इस उपन्यास में देख सकते हैं| इस उपन्यास का केन्द्रीय पात्र भी 'डेरा जट्टा' गाँव है| वहीं 'कलि-कथा वाया बाइपास' उपन्यास में ग्रामीण और शहरी दोनों परिवेश को दिखाया गया है| दोनों परिवेश के माध्यम से परिवार की संरचना और संबंधों के अलग-अलग रूप को दिखाने प्रयास किया है| साथ ही उपन्यास में आजादी से पहले और बाद के आधुनिक समय में हुए बदलाव के असर को भी रेखांकित किया गया है| तीसरा उपन्यास 'मिलजुल मन' है जिसमें आजादी के तुरंत बाद से कथा शुरू होती है जिसका सिरा आधुनिक समय तक जुड़ा हुआ दिखता है| ऐसे में समय के साथ जो बदलाव आ रहे थे उसका असर परिवार और समाज पर कैसा पड़ रहा था सबका सूक्ष्म अंकन यहाँ दिखलाई देता है| 'पारिजात' उपन्यास आधुनिक समय की कहानी है| जिसमें बुनियादी धरातल पर स्त्री और पुरुष को बहुत हद तक समान दिखाया गया है| साथ ही ऐसे समय में समाज और परिवार के रूप में आ रहे बदलाव को भी देखा गया है| यहाँ इस अध्याय में इसके इसी रूप की चर्चा भी की गयी| 'नाला सोपारा' उपन्यास एक किन्नर जीवन की कथा है| जिसके माध्यम से परिवार की संरचना और समाज की सच्चाई के यथार्थ रूप को सीधे-सपाट तरीके से दर्शाया गया है| साथ ही किन्नर समाज की संरचना को भी यहाँ देखा गया है| यह उपन्यास संयुक्त और एकल परिवार को भी बड़ी सहजता से प्रकट करता है|

'सांस्कृतिक परिस्थिति' में सभी माहिला साहित्यकारों के उपन्यासों में व्यक्त रहन-सहन, खान-पान एवं रीति-रिवाज का विश्लेषण किया है| 'जिंदगीनामा' उपन्यास में कई धर्म के लोगों के जीवन यापन को अंकित किया है| जिसके रहन-सहन, पहनावा, खान-पान सभी को बराबर से लेखिका ने दर्शाया है| सभी धर्मों का अपना अनुशासन होता है, जिसके तहत वो जीवन यापन करते हैं| इस उपअध्याय में इसी तरह की भिन्नता में एकता को

दिखाने का प्रयास किया है| 'कलिकथा वाया बाईपास' में जातिगत और स्थानीय भिन्नता के साथ-साथ अंग्रेजों के शासन काल में और उसके बाद उनके प्रभाव से उत्पन्न भिन्नता को यहाँ रेखांकित किया गया है| साथ ही 'मिलजुल मन' और 'पारिजात' में आधुनिक समय में हुए बदलाव के सीधे असर को देखा गया है| यहाँ दर्शाये गए समाज में हो रहे बदलाव का सीधा असर सांस्कृतिक बदलाव के तौर पर देखा गया है| 'मिलजुल मन' में जहाँ एक खास तरह के समाज के बदलाव को दिखाया गया है वहीं 'पारिजात' में आधुनिक समय में हिंदू और मुस्लिम समाज के आंतरिक और बाह्य रूप के साम्य और वैषम्य को एक साथ दिखाने प्रयास किया है| 'नाला सोपारा' में भी एक तरफ गुजराती संस्कृति तो दूसरी तरफ बड़े महानगर के कल्चर को एक साथ प्रस्तुत किया गया है| इन सभी उपन्यासों में व्यक्त अपने समय की संस्कृति को यहाँ एक साथ दिखाने का प्रयास किया गया| जैसा कि हम जानते हैं कि भारतीय संस्कृति भिन्नता में एकता को प्रदर्शित करती है उसी धरातल पर इन सभी उपन्यासों की गणना करते हुए उनमें व्यक्त संस्कृति का विश्लेषण इस उपअध्याय में मेरे द्वारा करने का प्रयास किया गया है|

इस अध्याय के तीसरे उपअध्याय में 'धार्मिक परिस्थिति' को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखते हुए विवेचन किया है| भारतीय समाज में धर्म का काफी महत्त्व है, ऐसे में उपन्यास में व्यक्त धर्म सापेक्ष तत्त्वों को लेखिकाओं ने किस तरह दर्शाया है उसको समझने का प्रयास किया गया है| धर्म एक ऐसा अनुशासन है जो लोगों के आचरण को नियंत्रित करते हुए उसे सन्मार्ग की ओर ले जाता है| प्राचीन समय से धर्म का हमारी संस्कृति में विशेष महत्त्व रहा है, इसके मूल्य को कई पुरानी कथाओं और पुराणों के माध्यम से देखा और जाना जाता रहा है| साथ ही धार्मिक मूल्यों के साथ खिलवाड़ को भी देखा जाता रहा है| इस सच्चाई को हम नकार नहीं सकते| धर्म की स्थापना समाज का कल्याण करने के उद्देश्य से की गयी जिसमें सभी धर्म और जाति के लोग सौहार्द पूर्वक जीवन व्यतीत कर सके| लेकिन धर्म के बदलते मूल्य ने मानव जीवन को कई तरह से प्रभावित भी किया| सभी लेखिकाओं ने अपने-अपने उपन्यास में जहाँ एक तरफ धार्मिक सौहार्द को दिखाया है| वहीं वे इसमें व्याप्त धार्मिक रूढ़ियों एवं कट्टरता, अंधविश्वास, अंधभक्ति, साम्प्रदायिकता तथा कुप्रथा को रेखांकित करते हुए दोनों पक्षों के माध्यम से समाज की सच्चाई को बताया है| इस उपअध्याय में मैंने उपन्यास में प्रतिबिंबित धर्म के दोनों पक्षों को आधार बनाते हुए इसका विश्लेषण किया है| धर्म की उपासना पद्धति में आए मूल्यों से जुड़ी बातों को दिखाते हुए धर्म के प्रति आस्था, भक्ति भाव, सौहार्द का विवेचन करते हुए उसके दूसरे पक्ष अर्थात्

टूटते-बिखरते मूल्यों जैसे कि- अन्धविश्वास, धार्मिक कट्टरता, और एक-दूसरे धर्म के प्रति घृणा भाव को दिखाने का प्रयास किया है|

चौथे उपअध्याय 'राजनीतिक परिस्थिति' में लेखिकाओं के उपन्यासों में अभिव्यक्त राजनीतिक तत्वों पर प्रकाश डाला गया है| किसी भी समाज के निर्माण में राजनीति की अहम भूमिका होती है| राजनीतिक मूल्य समाज के विकास को गति प्रदान करता है| ऐसे में राजनीति जब अपना मूल्य खो दे तो समाज में अराजकता की स्थिति पैदा हो जाती है और यह मानव मूल्यों को भी हर तरफ से प्रभावित करती है| लेखिकाओं ने अपने उपन्यास में आज की भ्रष्ट राजनीति को और उससे उत्पन्न स्थिति को दर्शाया है| साथ ही समाज की कानून व्यवस्था को लेकर भी चिंता जाहिर की है| उपन्यास में राजनीति और कानून व्यवस्था के आपसी संबंध की सच्चाई को दिखाया है| आज की राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति तक सीमित होकर रह गयी है, जिससे समाज में घूसखोरी, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, भाई-भतीजावाद, जातिवाद जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं| इन सभी समस्याओं पर लेखिकाओं की चिंता को स्पष्ट तौर देखा गया है| अतः इस अध्याय में राजनीतिक चेतना का मूल्यांकन करते हुए उसके सभी पक्षों को उनके मूल जनवादी दृष्टिकोण को विवेचित किया गया है|

'आर्थिक परिस्थिति' इस अध्याय का अंतिम उपअध्याय है| जिसमें उपन्यासों में अभिव्यक्त आर्थिक समस्या और अर्थ की महत्ता दोनों परिदृश्य से उत्पन्न स्थिति को दिखाया है| जैसा कि हम जानते हैं किसी भी समाज निर्माण की पृष्ठभूमि में अर्थ की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है| जैसे-जैसे समय और समाज बदलता गया अर्थ की महत्ता भी बदलती गई| आज के आधुनिक दौर में बढ़ती अर्थ की महत्ता को लेकर कई तरह के सवाल सामने आते हैं, जिनमें अर्थ को समस्या के तौर पर ज्यादा देखा गया है| अर्थ की समस्याओं को लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में उकेरने का प्रयास किया है जिसमें अर्थ के कारण बंटे समाज और परिवार को रेखांकित किया गया| आज के समय में अर्थ का जितना महत्त्व एक पुरुष के जीवन में है उतना ही स्त्री के लिए भी अर्थ महत्त्व रखता है| साथ ही आज के युवा वर्ग में अर्थ की ज्यादा महत्ता उसे संवेदनात्मक स्तर पर कमजोर बना रही है| लोगों के आपसी संबंध में आ रही दूरी का एक सबसे बड़ा कारण पैसे की भूख को भी माना गाया है, अतः अर्थ की असीम चाह ने अपनों को अपनों से कोशों दूर किए हुए है| ऐसे में समाज संबंधो के स्तर पर दिनों-दिन बेजान और कमजोर होता जा रहा है| सभी उपन्यासों में अर्थ की महत्ता के सभी पक्षों का सजीव चित्रण देखा जा सकता है| अतः इस अध्याय को इसी सन्दर्भ में आंकने का प्रयास किया गया है|

अध्याय तीन 'पुरस्कृत महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में वर्णित वैयक्तिक समस्याओं' पर केंद्रित है| उपन्यास में प्रतिबिंबित व्यक्ति जीवन की उन तमाम समस्याओं को देखा गया है जो आधुनिक समय की देन हैं| इस अध्याय को मैंने पांच उपअध्यायों में वर्गीकृत कर विवेचन किया है| पहला उप-अध्याय 'अकेलापन व अजनबियत' की समस्याओं को आधार बनाकर व्याख्यायित किया है| मनुष्य सामाजिक प्राणी है| समाज में रहकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए वह निरंतर संघर्षरत होता है| जिससे उनका जीवन सफलता और विफलता के बीच फँस कर रह जाता है| ऐसे में उनके मन पर तनाव की खिंची लकीर का अंदाजा लगाया जा सकता है और यही तनाव और निराशा घुटन में बदल जाती है| अतः व्यक्ति अकेलेपन और अजनबियत के भाव से ग्रसित हो समाज से कटा हुआ महसूस करता है| लगभग सभी उपन्यासों में वैश्वीकरण और निजीकरण से उत्पन्न प्रतिस्पर्धा का भाव लोगों के आपसी संबंध को अर्थहीन सा बना दिया है| आज के समय में व्यक्ति अपने परिवार और समाज में रहकर भी उनसे दूर हो चुका है| उदहारण के तौर पर 'जिंदगीनामा' में शाहनी, 'पारिजात' का रोहन, 'कलिकथा वाया बाइपास' के किशोर बाबू, 'मिलजुल मन' के मामा जी और 'नाला सोपारा' का बिनोद ऐसे ही पात्र हैं जो अकेलेपन व अजनबियत के भाव से ग्रसित हैं| अतः ऐसे कई पात्रों के माध्यम से मैंने इस उपअध्याय में इन समस्याओं का विश्लेषण किया है| इस अध्याय का दूसरा उप-अध्याय 'विस्थापन की समस्या' है| विस्थापन आज के दौर की प्रमुख समस्याओं में से एक है| विस्थापन के कई कारण हो सकते हैं| आज के समाज में खासकर युवा वर्ग में बेरोजगारी की समस्या को इसकी सबसे बड़ी वजह के तौर पर देखा गया है| इसके अतिरिक्त अच्छी शिक्षा पाने के लिए भी लोग एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं| अतः बेहतर जीवन की तलाश में विस्थापित लोगों की समस्याओं को इन उपन्यासों के माध्यम से यहाँ विश्लेषित किया गया है| तीसरा उप-अध्याय **'**रिश्तों का सिमटा दायरा' में रिश्तों को आधार बनाकर विवेचन किया गया है| उपन्यासों में व्यक्त आधुनिक युग में रिश्तों में आए परिवर्त्तन और उससे उत्पन्न समस्या को लेखिकाओं ने अंकित किया है| आज के समय का यह नया बदलाव जितना तरक्की भरा है उतना ही इस समय ने रिश्तों के खालीपन की खाई को और बढ़ावा दिया है| इस प्रकार रिश्तों के बुनियादी ढ़ांचे में आए बदलाव को दिखाते हुए मैंने इस उप-अध्याय का विश्लेषण किया है| चौथे उप-अध्याय में 'स्वप्न का संघर्ष' का विवरण दिखाया है| स्वप्न एक स्वतःस्फूर्त क्रिया है| ऐसी प्राकृतिक क्रिया जिस पर मनुष्य का नियंत्रण न के बराबर हो| उसमें उत्पन्न समस्या को यहाँ दिखाने का प्रयास किया गया है| 'पारिजात' में रूही के

स्वप्न, 'जिंदगीनामा' में शाह और शाहनी का स्वप्न, 'कलिकथा वाया बाइपास' में किशोर बाबू का स्वप्न की चर्चा इस उपअध्याय का विषय है, जिसके माध्यम से स्वप्न के संघर्ष को समझने का प्रयत्न किया गया है| फ्रॉयड और युंग की परिभाषा का सामान्य परिचय देते हुए इनके उपन्यासों के पात्रों के स्वप्न को समझने का प्रयास किया गया है|

पाँचवा और अंतिम उप-अध्याय के रूप में 'आत्महत्या की समस्या' को दिखाने का प्रयत्न किया गया है| लगभग सभी महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में इस समस्या को दिखाया गया है| कुछ उपन्यास में इसकी आंशिक चर्चा मात्र की गई है| दरअसल आत्महत्या की कई वजह होती है जिसमें ज्यादातर आगे निकलने की होड़ में पीछे रह गए लोगों के मन में हीन भाव को देखा गया है| इस प्रकार आत्महत्या के कई कारण जिनमें अवसाद, निराशा, कुंठा, घुटन, पक्षपात, यौन शोषण आदि से उत्पन्न समस्या को इस उपअध्याय में दिखाने का प्रयास किया है|

अध्याय चार 'पुरस्कृत महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में वर्णित स्त्री जीवन का अध्ययन' है| इसमें लेखिकाओं के उपन्यासों में अभिव्यक्त पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री जीवन से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है| इस अध्याय को कुल चार उप-अध्याय में वर्गीकृत कर शोध कार्य किया है| पहला उप-अध्याय 'पितृसत्तामक समाज और अस्मिता मूलक प्रश्न' पर आधारित है| पितृसत्ता एक सोच है अर्थात् एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था जिसमें पुरुष पहले स्थान पर स्त्री दूसरे एवं अन्य (थर्ड जेंडर) तीसरे स्थान पर आता है| वहीं जब हम अस्मिता की बात करते हैं तो उसका आशय पितृसत्तात्मक सोच से मुक्ति की होती है| समाज के उन तमाम दायरों और जकड़न से मुक्ति और समान अधिकार पाना ही अस्मिता कहलाता है| स्त्रियों के साथ-साथ आज हाशिये के समाज के अन्य वर्ग के लोग भी समय-समय अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ रहे हैं| थर्ड जेंडर उन्हीं में से एक है| इस उप-अध्याय में मैंने अस्मिता से जुड़े उन तमाम प्रश्नों को उठाया है जिसकी पहल समाज में जगह-जगह देखी जाती रही है|

दूसरा उप-अध्याय 'परिवार में स्त्री' में लेखिकाओं के उपन्यासों में विवेचित समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है| इस उपअध्याय को तीन बिन्दुओं के द्वारा व्याख्यायित करने का प्रयास किया है| पहला श्रम, दूसरा प्रजनन, एवं तीसरा लैंगिकता| भारतीय समाज में संस्कारगत अवधारणाओं के नाम पर हो रहे असामान्य व्यवहार में स्त्री के स्थान को बखूबी समझा जा सकता है| साथ ही परंपरा और संस्कार के नाम पर पारिश्रमिक न देने की प्रथा,

अपने ही शरीर पर उसका अधिकार न होना अर्थात् प्रजनन का अधिकार, साथ ही लैंगिकता जिसमें यौन संबंध से जुड़ा निर्णय लेने का अधिकार भी उसे नहीं है| इन तमाम बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए उपन्यास के माध्यम से ऐसी समस्याओं को यहाँ दिखाने का प्रयास किया है|

तीसरे उपअध्याय 'हिंसा में स्त्री' में उपन्यासों में वर्णित समाज की सच्चाइयों पर प्रकाश डाला गया है| इस उप-अध्याय में स्त्री देह पर हो रहे अत्याचार को केन्द्र में रखकर कार्य किया गया है| समाज में ऐसे कई उदहारण हैं जो स्त्री शरीर को पशु की तरह देखते हैं| समाज में कैसी भी हिंसा हो उसमें स्त्री शरीर को पहला निशाना बनाया जाता है जो पितृसत्तात्मक विचार को व्यक्त करता है| ऐसे में स्त्री को दोहरे स्तर की लड़ाई लड़नी पड़ती है| महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में ऐसी समस्याओं को कई जगहों पर अंकित किया है| 'जिंदगीनामा' में लेखिका ने हीरा और जीवां के माध्यम से घरेलू हिंसा को दिखाया है| 'कलिकथा वाया बाइपास' में लेखिका ने विश्व युद्ध के माध्यम से बंगाल में अंग्रेजी सैनिको द्वारा वहां की स्त्रियों के यौन शोषण को रेखांकित किया है| 'पारिजात' में रोहन और एलेसन के द्वारा घरेलू हिंसा को दिखाया है| 'नाला सोपारा' में किन्नर जीवन की सच्चाई को दिखाते हुए पूनम के बलात्कार को दर्शाया गया है| यहाँ घरेलू हिंसा, जातिगत हिंसा, सांप्रदायिक हिंसा, युद्ध में स्त्री शरीर, बलात्कार, छेड़छाड़ आदि को उपन्यासों के माध्यम से इस उप-अध्याय में दर्शाने का प्रयत्न किया गया है|

चौथे अध्याय का अंतिम उप-अध्याय 'गालियों में स्त्री' में लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्त गाली विषयक समस्याओं का विश्लेषण किया है| गालियों को समाज में असभ्यता और अभद्रता का प्रतीक माना जाता रहा है| गालियाँ दरअसल सामने वाले को अपमानित करने और नीचा दिखाने का एक तरीका है| साथ ही समाज में दी जानी वाली गालियों में सबसे ज्यादा जिन गालियों का प्रयोग किया जाता है वो स्त्री शरीर को निशाना बनाकर किया जाता है| जब समाज की पृष्ठभूमि पितृसत्तात्मक सोच वाली हो तो ऐसे समाज में स्त्री शरीर को प्रतिष्ठा से जोड़ कर देखा जाता है, ऐसे में किसी को अपमानित करने का इससे अच्छा तरीका और क्या हो सकता है| साथ ही साहित्य में इसके प्रयोग को लेकर भी कई तरह के सवाल उठते रहे हैं| यहाँ लेखिकाओं के उपन्यासों में गालियों का न के बराबर प्रयोग एक अच्छी साहित्यिक पहल की ओर इशारा करता है| 'जिंदगीनामा' में गालियों के कुछ प्रयोग दिखते हैं और अन्य उपन्यासों में बहुत कम| इन सभी के उपन्यासों में गालियों

के प्रयोग और समाज में उसकी मान्यता के सन्दर्भ को लेकर मैंने इस उप-अध्याय में कार्य करने का प्रयास किया है|

अध्याय पांच 'पुरस्कृत महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में वर्णित भाषा और शैली' मेरे शोध कार्य का अंतिम अध्याय है| इस अध्याय को मैंने दो उपअध्याय में वर्गीकृत कर उसे व्याख्यायित किया है| पहले उपअध्याय में भाषा को स्पष्ट करते हुए उपन्यासों में प्रयुक्त अन्य भारतीय भाषा, स्थानीय बोली और अन्य भाषागत शब्दों के प्रयोग का उल्लेख किया है| इसके साथ ही प्रतीक, लोकोक्ति एवं मुहावरे और काव्य/गीत के प्रयोग को बिन्दुवार तरीके से दर्शाया है| दूसरे उपअध्याय में शैलीगत अध्ययन को दिखाया है, जिसमें सभी उपन्यासों के अंतर्गत प्रयुक्त विभिन्न शैलियों के प्रयोग को रेखांकित करते हुए इनको व्याख्यायित किया है|